किसी और भोजन की लालसा न रखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

गिनती 11:6:
“अब तो हमारी आत्मा सूख गई है, यहां तो हमारे देखने के लिये
कुछ भी नहीं है, केवल मन्ना ही मन्ना दिखाई देता है।” (ERV-
HI)

प्रिय भाई और बहन प्रभु यीशु मसीह के सामर्थी नाम में आपको शुभकामनाएं। आज का दिन भी परमेश्वर की महान अनुग्रह की एक भेंट है। आइए, हम आज फिर मिलकर उसके वचन पर मनन करें।

जब इस्राएली लोग जंगल से होकर निकल रहे थे, तब उन्हें यह अंदाज़ा नहीं था कि उन्हें हर दिन एक ही तरह का भोजन मिलेगा मन्ना। शुरुआत में यह उनके लिए एक चमत्कार था। यह मन्ना मीठा, ताज़ा और हर सुबह परमेश्वर के हाथों से अद्भुत रूप से दिया जाता था। लेकिन समय के साथ, वे इससे ऊबने लगे। रोज़ एक ही खाना सुबह, दोपहर, और रात उन्हें एकरस लगने लगा। वे सोचने लगे, “यह कब तक चलेगा?” उन्हें विविधता चाहिए थी मांस, मछली, खीरे, लहसुन… और अगर वे आज के ज़माने में होते, तो शायद पिज़्ज़ा और बर्गर की भी लालसा करते!

गिनती 11:4-6:

किसी और भोजन की लालसा न रखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

“उनके बीच में मिले हुए लोगों की लालसा बढ़ गई। इस्राएली भी फिर रोने लगे और कहने लगे, ‘हमें मांस कौन खिलाएगा? हमें वे मछलियाँ याद आती हैं, जिन्हें हम मिस्र में बिना कीमत के
खाते थे, और वे खीरे, तरबूज, प्याज़, लहसुन और हरे साग भी याद
आते हैं। अब तो हमारी आत्मा सूख गई है, यहां तो हमारे देखने
के लिये कुछ भी नहीं है, केवल मन्ना ही मन्ना दिखाई देता
है।’” (ERV-HI)

वे भूल गए कि मिस्र का वह स्वादिष्ट खाना दरअसल गुलामी, बीमारी और दुःख के साथ जुड़ा हुआ था। वे स्वतंत्रता की सादगी की क़द्र करने के बजाय, गुलामी की पकवानों को याद करने लगे। हाँ, मन्ना देखने में साधारण था, लेकिन वह जीवनदायी था। वह उन्हें हर दिन पोषण देता और उन्हें स्वस्थ रखता था। मूसा ने बाद में उन्हें याद दिलाया:

व्यवस्थाविवरण 8:3-4:
“उसने तुम्हें नम्र बनाया, तुम्हें भूखा रहने दिया और फिर तुम्हें मन्ना खिलाया, जो न तो तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज जानते थे, ताकि तुम्हें यह सिखाए कि मनुष्य केवल
रोटी से ही नहीं जीवित रहता, परन्तु उस प्रत्येक वचन से जो यहोवा के मुख से निकलता है। इन चालीस वर्षों में तुम्हारे वस्त्र पुराने नहीं हुए और न ही तुम्हारे पाँव सूजे।” (ERV-HI)

किसी और भोजन की लालसा न रखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

आध्यात्मिक रूप से मन्ना परमेश्वर के वचन का प्रतीक है। यह स्वयं मसीह की ओर संकेत करता है, जो स्वर्ग से आया सच्चा जीवन का रोटी है:

यूहन्ना 6:31-35:
“हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना खाया। जैसा लिखा है,
‘उसने उन्हें स्वर्ग से रोटी दी खाने को।’ तब यीशु ने उनसे
कहा, ‘मैं तुमसे सच कहता हूं, मूसा ने तुम्हें स्वर्ग की रोटी नहीं दी, पर मेरे पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता
है। क्योंकि परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से आती है और संसार को जीवन देती है। … मैं जीवन की रोटी हूं।’” (ERV-HI)

जब हम मसीह में विश्वास करते हैं, तो हमें यह समझना चाहिए कि हमारी आत्मिक खुराक केवल एक ही स्रोत से आती है परमेश्वर का वचन। यही हमारी आत्मा का भोजन है। हम इसी से उठते हैं, इसी के साथ दिन बिताते हैं और इसी में विश्राम पाते हैं। यही हमारा जीवन, हमारी शक्ति और हमारी दैनिक रोटी है। परमेश्वर ने हमें बाइबल के साथ कोई “सेल्फ-हेल्प बुक” या मनोरंजन की सामग्री नहीं दी। हमें वचन + खेल, वचन + पॉप-संस्कृति या वचन + दर्शन की ज़रूरत नहीं है। वचन ही पर्याप्त है।

लेकिन हमारा मन कितना जल्दी भटक जाता है! जैसे इस्राएली मन्ना

किसी और भोजन की लालसा न रखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

से ऊब गए, वैसे ही आज भी कई विश्वासी परमेश्वर के वचन से ऊब जाते हैं। अपने विश्वास के शुरुआती समय में हम उत्साहित होते हैं हम संदेश सुनते हैं, वचन पढ़ते हैं, मनन करते हैं। पर समय के साथ कुछ लोग इसे नीरस, कठिन या उबाऊ मानने लगते हैं। हम “और कुछ नया” चाहते हैं भावनात्मक अनुभव, संस्कृति में मेल खाने वाली बातें।

धीरे-धीरे, लोग वचन को दुनियावी चीजों के साथ मिलाने लगते हैं जैसे संगीत, मनोरंजन, या आधुनिक विचारधाराएं। तब वचन मुख्य भोजन न रहकर, थाली में एक साइड डिश बन जाता है। और जैसे इस्राएली मन्ना को तुच्छ समझने लगे, वैसे ही हम भी उस वचन को तुच्छ समझने लगते हैं जो वास्तव में हमें जीवन देता है।

इसका परिणाम गंभीर होता है। जब इस्राएली मन्ना को छोड़कर मांस की मांग करने लगे, तो परमेश्वर ने उन्हें मांस तो दिया लेकिन उसके साथ न्याय भी किया:

गिनती 11:33:
“परन्तु जब वह मांस अब भी उनके दांतों में था, और पूरी तरह चबाया भी नहीं गया था, तब यहोवा का क्रोध उनके विरुद्ध भड़क उठा और उसने लोगों को एक बहुत ही भारी महामारी से मारा।” (ERV-HI)

किसी और भोजन की लालसा न रखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

यह हमें जाग्रत करने वाली बात है। यदि हम परमेश्वर के वचन की बजाय किसी और “खुराक” की तलाश करेंगे, तो हम आत्मिक रूप से कमज़ोर, भ्रमित और न्याय के पात्र हो सकते हैं। परमेश्वर का वचन कोई ऐच्छिक चीज़ नहीं है — यह जीवन के लिए अनिवार्य है। यीशु ने स्वयं जंगल में कहा:

मत्ती 4:4:
“मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता, परन्तु हर उस वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।” (ERV-HI)

प्रिय जनों, आइए हम इस्राएलियों की तरह न बनें, जिन्होंने उस भोजन को ठुकरा दिया जो उन्हें जीवन देता था। आइए हम परमेश्वर के वचन को फिर से प्रेम करना सीखें। चाहे यह दुनिया इसे पुराना या उबाऊ माने, हम जानते हैं कि यही एकमात्र खुराक है जो आत्मा को वास्तव में तृप्त करती है। यह हमें मज़बूत बनाती है, शुद्ध करती है और अनंत जीवन के लिए तैयार करती है।

नई-नई स्वाद की खोज बंद कीजिए। वचन के आज्ञाकारी बनिए। उस पर विश्वास रखिए। उसी से जीवन पाइए। सांसारिक लालसाओं को संसार पर छोड़ दीजिए।

किसी और भोजन की लालसा न रखें

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

प्रभु हमें अनुग्रह दे कि हम हर दिन केवल उसके वचन में ही सच्ची प्रसन्नता पाएं। यदि हम इसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें, तो हम कभी कमज़ोर नहीं होंगे, बल्कि मज़बूत, आशीषित और उसके राज्य के लिए तैयार होंगे।

हिम्मत रखो। पोषित हो। दृढ़ बने रहो।
और प्रभु तुम्हें भरपूर आशीष दे।

Share on:
WhatsApp